ग्रीन रिवोल्ट

हरित-नीरा रहे वसुंधरा

पेजः 4

अद्भूत है लोहरदगा का अखिलेश्वर धाम

रविवारीय, 10 – 16 नवंबर 2019, वर्ष- एक, अंक-14, रांची | हिन्दी साप्ताहिक | R.N.I. No. JHAHIN/2019/78094 | कुल पृष्ठ 4 | मूल्य 2 रूपये

ग्रीन रिवोल्ट के पाठकों से आग्रह है कि आप पर्यावरण, कृषि, जल संरक्षण, पशुपालन, बागवानी , पेट्स, वृक्षारोपण से संबंधित खबरें, समस्यायें, लेख,सुझाव, प्रतिक्रियायें या तस्वीरें हमें अवश्य भेजें। हमारा इमेल एवं ह्वाट्सएप नंबर है।

greenrevolt2019@gmail.com

9798166006

वायुयानों से बढ रहा है प्रदूषण

दुनिया में लगातार बढ़ रहे एविएशन उद्योग से जलवायु परिवर्तन और वायु प्रदुषण बढ़ रहा है। विमानों में इस्तेमाल होने वाले ईंधन के जलने से उत्सर्जन के रूप में वातावरण में नाइट्रोजन ऑक्साइड और कार्बन डाइऑक्साइड फैलती है। इससे जलवायु परिवर्तन के साथ-साथ वायु प्रदूषण फैल रहा है। हालांकि इसकी मात्रा बेहद कम है, लेकिन इससे हर साल लगभग 16 हजार लोगों की मौत हो जाती है।

यह दावा अमेरिका स्थित मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) द्वारा किए गए एक शोध में किया गया है। एमआईटी टीम ने पाया कि एविएशन के विकास में वृद्धि होने से जलवायु के साथ-साथ वायु की गुणवत्ता को दोगुना नुकसान होता है। शोध में विमानों के उत्सर्जन से जलवायु और हवा की गुणवत्ता पर पड़ने वाले प्रभावों से होने वाले नुकसान को कैसे कम किया जाए, तथा व्यापार पर इसका क्या असर पडेगा, इसका तुलनात्मक आकलन किया गया है। यह अध्ययन एनवायर्नमेंटल रिसर्च लेटर्स पत्रिका में प्रकाशित हुआ है।

झारखंड विधानसभा चुनावों में पर्यावरण की चिंता और आपदा नियंत्रण किसी भी पार्टी के एजेंडे में नहीं, जनता भी इन मुद्दों पर है उदासीन

चुनावों में पर्यावरण कोई मुद्दा नहीं

वरीय संवाददाता

रांची : झारखंड में विधानसभा चुनाव होने को हैं। सभी पार्टियां जनता से एक से एक लुभावने वादे कर रही हैं, लेकिन ये दुर्भाग्य की बात है कि, किसी भी पार्टी के चुनावी एजेंडे में पर्यावरण संरक्षण का वादा नहीं है।

झारखंड जैसे राज्य में जहां जंगलों, पहाड़ों , झरनों और तालाबों की बहुतायत है वहां इनका तेजी से गैरकानूनी तरीके से दोहन हो रहा है और राज्य की खुबसूरती के साथ ही पर्यावरण भी बिगड़ते जा रहा है। लेकिन किसी भी राजनीतिक पार्टी ने इनके संरक्षण या गैरकानूनी दोहन पर रोक लगाने की बात नहीं की है। कभी कभार इसके लिये सरयू राय को चिंतित देखा गया है। जिन्होंने दामोदर को बचाने के लिये अभियान भी चलाया था। राज्य तो छोड़िये रांची में ही पहाड़ों पर निर्माण, झीलों के कैचमेंट तक में बेधड़क मकान बन रहे हैं और सरकार की तरफ से कोई रोक नहीं लगायी गयी है। कांके डैम में फिर से मकान बन गये जिसे कुछ साल पहले ध्वस्त कर दिया गया था। बरियातू पहाड़ी हो, गोंदा पहाड़, रांची पहाड़ी या नदियों के कैचमेंट सभी अतिक्रमण के शिकार हैं। वोट की राजनीति और लोगों के अवैध घोर विरोध के कारण इस पर कोई लगाम नहीं लगाया जा रहा है। राज्य में पर्यावरण के लिये जरूरी पहाड़ों को क्रशर माफियायों ने लील लिया है।

हरमू नदी

क्या हमारा भविष्य भी दिल्ली जैसा होगा?

दिवाली के बाद दिल्ली में हवा का प्रदूषण इतना ज्यादा था कि धुंध के कारण वहां पांच दिनों तक इमर्जेंसी के हालात रहे। स्कूल कॉलेज बंद रहे। झारखंड में अभी ऐसी कोई स्थिति नही, पर कल कारखानों और खदानों वाले झारखंड में हम निश्चिंत होकर नहीं बैठ सकते। अगर हम आज ही नहीं चेते तो भविष्य में यहां भी हालात बिगड़ सकते हैं। अभी राज्य में सबसे प्रदूषित जिला धनबाद है।

झारखंड का दुर्भाग्य है : डॉ. नितिश प्रियदर्शी

देश के जाने माने पर्यावरणविद् और जियोलॉजिस्ट डॉ. नितिश प्रियदर्शी का कहना है कि पूरे विश्व में आज सबसे बड़ा विषय पर्यावरण संरक्षण है लेकिन ये दुर्भाग्य की बात है कि झारखंड चुनावों में किसी भी पार्टी के लिये यह कोई विषय नहीं। वही हाल आपदा प्रबंधन को लेकर भी है, मात्र तीन महिने में राज्य में एक हजार बार बिजली गिरी है पर किसी को इसके भयावहता की चिंता नहीं है। सभी पार्टियां लोलुभावन घोषणाओं और वादों को करने में लगी हुयी हैं। महंगाई और गरीबी बढने तक के पीछे पर्यावरण संकट है। बहुत सारे लोगों को ये जानकारी भी नहीं कि पहाड़ों की बर्बादी के कारण जलसंकट उत्पन्न हो रहा है। पहाड़ जलस्तर बनाये रखने में भी सहायक होते हैं। झारखंड में जो इक्का दुक्का नेता पर्यावरण और आपदा को लेकर कभी कभार चिंता व्यक्त करते हैं, वो भी सिर्फ एक्टिविस्ट हैं, अकादमिसियन नहीं। उनकी चिंता तो झलकती है पर उन्हें संरक्षण के तकनीक की जानकारी नहीं है। सरकारों को चाहिये कि वो पर्यावरणविदों से राय लेकर राज्य में जल संरक्षण, वन संरक्षण, पहाड़ों को बचाने और आपदा नियंत्रण पर ठोस काम करें।

बरही में 4268 पेड़ काट दिए, आरे जंगल जैसी है त्रासदी पर कहीं कोई सुगबुगाहट नहीं: संजय मेहता

हजारीबाग, कोडरमा, बरही, NH – 31, जवाहर घाट. इस इलाके में सड़क चौड़ीकरण में 4268 पेड़ काट दिए गए हैं। काटे गए पेड़ो का आंकड़ा शनिवार 09 नवंबर 2019 तक का है। कुल 11692 पेड़ इस परियोजना में प्रभावित हो रहे हैं। 5491 पेडों को काटा जाना है। 6201 पेड़ों को ट्रांसप्लांट करने की बात कही गयी है। असल में ट्रांसप्लांट किया नहीं जाएगा। उसे भी काट दिया जाएगा। यह सब चाल सिर्फ NOC को हासिल करने के लिए अपनाया जाता है। लगभग 12 हजार पेड़ों को दिनदहाड़े काट दिया जा रहा है। यह मुंबई के आरे जंगल से भी पर्यावरण की बड़ी प्रायोजित त्रासदी है। कहीं कोई विरोध नहीं है। दिल्ली की हालत हम सबों ने देखी है। प्रदूषित यमुना को भी हम सबने देखा। जंगलों की हालत हम सब देख रहे हैं। हम सब अपनी मौत की पटकथा लिख रहे हैं। समझ नहीं आता पर्यावरण मंत्रालय NOC देने के लिए है या पर्यावरण को बचाने के लिए ? आइए सब मिलकर इस त्रासदी को रोकें। जो पेड़ 20 – 50 साल में बड़े हुए, उसे मिनटों में काट देना कहीं से उचित नहीं है। सरकार इसका विकल्प निकाले। पेड़ों की हत्या हमें मंजूर नहीं। उच्च स्तर पर बात पहुंचा दिया हूं । परिणाम सबको पता है। इसलिए इसे मिलकर लड़ें। किसी भी कीमत पर पेड़ों को बचाया जाना चाहिए।

उलिहातु गांव के किसानों की आय दुगुनी होगी: डॉ. आर एस कुरील

संवददाता रांची : भगवान बिरसा के नाम से स्थापित कांके स्थित राज्य के एकमात्र कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ राम शंकर कुरील ने बिरसा जन्मस्थली उलिहातु गाँव को गोद लेने की घोषणा 3 अक्टूबर को केवीके की समीक्षा बैठक में की थी। कुलपति के निर्देश पर बीएयू महिला वैज्ञानिक डॉ निभा बाड़ा, डॉ वलेरिया लकड़ा, डॉ शीला बारला, डॉ शशि किरण तिर्की, डॉ सुप्रिया सुपल सरीन एवं टीचिंग एसोसिएट स्नेहा कुमारी के दल ने 10 अक्टूबर को गाँव का दौरा किया। इस दल ने गाँव में कृषि कार्यक्रमों की संभावनाओं के आकलन के लिए गाँव के महिला कृषकों से मुलाकात कर कृषि की स्थिति का आकलन किया।महिला वैज्ञानिकों के प्रतिवेदन पर कृषि विज्ञान केंद्र, सिमडेगा के वैज्ञानिक डॉ शंकर कुमार सिंह एवं डॉ. हिमांशु सिंह ने गाँव के मुखिया और भगवान बिरसा के पोते सुखराम मुंडा से मुलाकात कर कुलपति द्वारा गाँव को गोद लेने और विश्वविद्यालय द्वारा कृषि शोध एवं प्रसार कार्यक्रम चलाने के बारे में बताया।

बिरसा जयंती पर विशेष

गाँव में कृषि क्षेत्र में अपार संभावनाओं को देखते हुए कुलपति ने बीएयू मुख्य वैज्ञानिक डॉ सोहन राम के नेतृत्व में 6 कृषि वैज्ञानिकों के दल को कृषि क्षेत्र में शोध एवं प्रसार द्वारा कृषि विकास एवं किसानों की आय में बढ़ोतरी तथा रोजगार सृजन की संभावनाओं को तलाशने गाँव भेजा। इस दल ने 18 अक्टूबर को गाँव के मुखिया, पाहन, पुरूष एवं महिला किसानों के साथ बैठक किया। दल के कृषि वैज्ञानिक डॉ सोहन राम, डॉ जयलाल महतो, डॉ अरुण कुमार, डॉ कमलेश कुमार, डॉ सीएस महतो, डॉ योगेश कुमार एवं डॉ सूर्य प्रकाश ने धान की परती भूमि और धान की खेती उपरांत खाली खेत, सिंचाई के साधन की जानकारी ली। इस अवसर पर वैज्ञानिकों ने विश्वविद्यालय द्वारा चालु रबी मौसम में गेहुँ, चना, राई - सरसों एवं तीसी खेती का अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण,प्रक्षेत्र दिवस और प्रशिक्षण के आयोजन तथा पशु वैज्ञानिक डॉ पंकज सेठ ने आधुनिक पशुपालन तकनीक के बारे में बताया। कृषि प्रसार की पीआरए सर्वे तकनीक से गाँव में कृषि शोध एवं प्रसार की समस्यायों, व्यवधान एवं संभावनाओं *....शेष पेज 3 पर*

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय कांके, रांची

डॉ. आर.एस. कुरील : कुलपति बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, रांची

छोटानागपुर एवं संथाल परगना के किसानों की सामाजिक-आर्थिक दशा सुधारने के उद्देश्य से बिरसा कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना वर्ष 1980 में हुई, जिसका विधिवत उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने 26 जून, 1981 को किया। वर्त्तमान में इसके अन्तर्गत तीन संकाय और 11 महाविद्यालय – रांची कृषि महाविद्यालय, कांके, रांची; रांची पशुचिकित्सा महाविद्यालय, कांके, रांची; रांची वानिकी महाविद्यालय, कांके, रांची; जैव प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, कांके, रांची; रबींद्रनाथ टैगोर कृषि महाविद्यालय, देवघर; कृषि महाविद्यालय, गढ़वा; तिलका मांझी कृषि महाविद्यालय, गोड्डा; फूलों झानो दुग्ध प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, हंसडीहा, दुमका; मत्स्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, गुमला; कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय, कांके, रांची तथा उद्यान महाविद्यालय, खूंटपानी, पश्चिमी सिंहभूम चल रहे हैं । इसके अतिरिक्त दुमका, दारीसाई (पूर्वी सिंहभूम) और चियांकी (पलामू) में क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, गौरिया करमा (हजारीबाग) में बीज उत्पादन, अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र तथा लातेहार, पलामू, गढ़वा, लोहरदगा, सिमडेगा, पूर्वी सिंहभूम, पश्चिमी सिंहभूम, सरायकेला-खरसांवा, बोकारो, धनबाद, गिरिडीह, चतरा, जामताड़ा, दुमका, साहेबगंज और पाकुड़ में 16 कृषि विज्ञान केन्द्र आईसीएआर के सौजन्य से बीएयू के अन्तर्गत चल रहे हैं, जो क्षेत्रीय समस्याओं और जरूरतों के अनुरूप काम करते हैं ।

उद्देश्य

कृषि, पशुपालन एवं वानिकी संबंधी शिक्षा के माध्यम से मानव संसाधन विकास करना कविश्वविद्यालय द्वारा कृषि, पशुपालन एवं वानिकी क्षेत्रों में विकसित की गई तकनीकों तथा आधुनिक अद्यतन कृषि तकनीकों के प्रसार के माध्यम से किसानों की आजीविका एवं पोषण सुरक्षा को बढ़ावा एवं ग्रामीण स्तर रोजगार सृजन को बढ़ावा तथा किसानों की आय दुगुनी करने में तकनीकी मार्गदर्शन ।

शिक्षण शोध एवं प्रसार के कार्यक्रम

- कृषि, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन, वानिकी, दुग्ध प्रौद्योगिकी, मत्स्य प्रौद्योगिकी, कृषि अभियंत्रण एवं उद्यान विषयों में स्नातक पाठयक्रम ।
- कृषि, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन एवं वानिकी के 31 विभागों में एमएससी और एमवीएससी पाठ्यक्रम तथा 23 विभागों में पीएचडी पाठ्यक्रम इनके अतिरिक्त जैव प्रौद्योगिकी में एमएससी पाठयक्रम, कृषि अभियंत्रण एमटेक पाठ्यक्रम तथा कृषि व्यवसाय प्रबंधन में मास्टर पाठ्यक्रम।
- विश्वविद्यालय सेवा आयोग से मान्यता प्राप्त 16 विषयों में डिप्लोमा, प्रमाण – पत्र एवं बैचलर ऑफ़ वोकेशनल पाठ्यक्रम किसानोपयोगी सेवाएं ।
- कृषि, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन, वानिकी, मधुमक्खी पालन, जल संरक्षण एवं यंत्रीकृत कृषि के संबंध में तकनीकी परामर्श सेवा ।
- फसल प्रबंधन, उत्पादन, रोग प्रबंधन, पोषण प्रबंधन, पशु-पक्षी पोषण, प्रबंधन, चिकित्सा एवं मत्स्यपालन संबंधी परामर्श सेवा ।
- कृषि, पशुपालन एवं वानिकी में विभिन्न अवधियों का सतत प्रशिक्षण कार्यक्रम ।
- कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक) के माध्यम से कृषि उपादानों एवं साहित्य का विक्रय तथा किसान कॉल सेंटर द्वारा किसानों की कृषि संबंधी समस्याओं एवं जिज्ञासा का तकनीकी समाधान ।
- मिट्टी, जल तथा पौधों के रोग-कीट ग्रस्त नमूनों की जांच ।
- विभिन्न फसलों के उन्नत बीज तथा बागवानी फसलों की पौध रोपण सामग्री का विक्रय।

संपर्क सूत्र : शिक्षण - कुलसचिव : 2450832/ 9934270068, अनुसंधान : 2451055/9430362061, www.bauranchi.org

प्रसार शिक्षा : 2450849, कुलपति कार्यालय : 2450500, एटिक एवं किसान कॉल सेंटर : 2450955, 2450698

क्रूर और लापरवाह हैं सरकारें

कभी झारखंड के जिलों में भ्रमण पर निकलिये, अगर आप प्रकृति और पर्यावरण के प्रति संजीदगी रखते हैं, जानकारी रखते हैं तो आप का मन चिंता और दुख से भर जायेगा। संभव है दस साल पहले के देखे गये पहाड़ आपको केक की तरह कटे हुये नजर आयें, जिन हरियाली भरे रास्तों से होकर किसी खास वन या पेड़ों की कतार को देखने की आप की आदत रही है वो जगह अब उजाड़ सा नजर आये या आप उसे पहचान ही न पायें। अकेले लोहरदगा जिले में ही कई पहाड़ों को क्रशर उद्योग के लिये काटा जा रहा है। कुछ को काट दिया गया है और कुछ कटने की प्रक्रिया में हैं। और ये सब सरकार की मर्जी के बगैर संभव नही है। हकीकत में पर्यावरण के अवैध दोहन में माफिया और आपराधी तत्व तो दोषी हैं ही लेकिन इतना बड़ा गैरकानूनी काम हमेंशा सरकार के प्रमाद, भ्रष्टाचार या सहमति से ही चलता है। कायदे से तो क्रशर उद्योग को ही बंद कर देना चाहिये और उसके जगह किसी अन्य विकल्प पर विचार करना चाहिये।

हमें ये मान कर चलना होगा कि सरकारें चाहें किसी की भी हों फायदे और राजस्व के चक्कर में पर्यावरण की चिंता उनकी प्राथमिकता में नहीं होतीं। मुंबई के आरे जंगल को काटने के पक्ष में वहां की सरकार ने बहुत सारी दलीलें दीं। झारखंड में ही हजारो पेड़ सड़क बनाने के नाम पर काट दिये गये हैं आगे और भी कटेंगे। झारखंड सरकार इन मुद्दों पर चुप्पी साध लेती है। युवा एक्टिविस्ट संजय मेहता ने बताया कि हजारीबाग बरही कोडरमा में बन रहे सड़क के लिये तकरीबन 12 हजार पेड़ काटे गये हैं, इनमें से आधे पेड़ों को काटने के बजाय शिफ्ट करना था, लेकिन ठेकेदार से लेकर कंपनियां इसमें धोखा करती हैं और कोई पेड़ शिफ्ट नहीं होता बल्कि उसे काट कर गायब कर दिया जाता है।

झारखंड के जाने माने पर्यावरणविद और जियोलॉजिस्ट नितिश प्रियदशी की माने तो पहाड़ों का विनाश जलसंकट भी पैदा करता है। साथ ही एक बार किसी पहाड़ से पत्थरों की कटाई की अनुमति मिलने के बाद उस पहाड़ को ही सफाचट कर दिया जाता है। वहां कितने हिस्से को काटने की अनुमति मिली है उसकी कोई प्रासंगिकता नहीं रह जाती। ऐसा भी नहीं है कि प्रकृति के प्रति ये उपेक्षा और दोहन में लगे रहने की प्रवृति सिर्फ झारखंड में है। कमोबेश यही हालत सारे राज्य सरकारों की है। उत्तराखंड में पत्थरों की खुदाई और ढुलाई के लिये गंगा नदी में ही बड़े बड़े ट्रक उतार दिये जाते हैं। बिहार में गांधी सेतु के पिलर के इर्द गिर्द बालू का अवैध उत्खनन निरंतर चालू रहता है। अखबारों में खबर के प्रकाशन के बाद कुछ दिन ये सब बंद रहता है , फिर मामला शांत होते ही बालू का खनन चालू हो जाता है।

भारत जैसे देश में पर्यावरण संरक्षण तो दूर की बात है। सरकारें उन बुनियादी संकटों से निबटने के लिये भी कठोर कदम नहीं उठातीं जिनसे आम लोगों को सांस लेने तक में कठिनाई हो जाये। दिल्ली में हवा का प्रदूषित होना और छठ पर्व में यमुना में प्रदूषण के कारण झाग देखने को मिला। यह झाग इतना ज्यादा था कि इसे देख किसी हिम प्रदेश में बर्फ के चादर होने का भ्रम हो रहा था। ये सभी खतरनाक घटनायें अखबारों से लेकर विश्व मीडिया में जगह तो पाती हैं, पर इनसे निबटने में सरकारों की रूचि तकरीबन न के बराबर रहती हैं। आखिर पराली जलाने पर सिर्फ प्रहसन ही तो होकर रह गया।

भारी बारिश से खड़ी फसल को नुकसान

एजेंसियां :इस साल मॉनसून सीजन के लंबा खिंचने से महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक और पंजाब के साथ-साथ मध्य प्रदेश में खरीफ की खड़ी फसल को भारी नुकसान पहुंचा है। हालांकि अक्टूबर में मॉनसून देर करके लौट चुका है, लेकिन कई जगहों पर अब भी काफी बारिश हो रही है। मौसम का पूर्वानुमान बताने वाली निजी एजेंसी स्काईमेट ने यह जानकारी दी है। अगर स्काईमेट का अनुमान सही साबित होता है तो देश में खरीफ उत्पादन पर इसका गंभीर असर पड़ सकता है। हालांकि सरकार ने कुछ महीने पहले ही पहला अग्रिम अनुमान जारी किया था। इस अनुमान में बताया गया है कि 2019 के खरीफ सीजन में खाद्यान्न उत्पादन पिछले साल से महज 0.80 फीसदी घटकर 14.057 करोड़ टन रह सकता है। 2019 में खरीफ फसल का रकबा 10.627 करोड़ हेक्टेयर रहा जो पिछले साल से महज 0.52 फीसदी कम है।

स्काईमेट ने कहा है कि फसल को सर्वाधिक नुकसान पश्चिम मध्य प्रदेश में हुआ है जहां 61 फीसदी अधिक बारिश हुई। स्काईमेट ने जानकारी दी है कि मध्य प्रदेश में जहां 40 से 50 फीसदी सोयाबीन की फसल प्रभावित हुई, वहीं गुजरात में 30 से 40 फीसदी मूंगफली और 30 फीसदी तक कपास की फसल को नुकसान पहुंचा है। मध्य प्रदेश देश का सबसे बड़ा तिलहन उत्पादक राज्य है। महाराष्ट्र में गन्ना, कपास, चावल, सोयाबीन, अरहर की दाल, मूंगफली आदि फसलों को सर्वाधिक नुकसान पहुंचा है। स्काईमेट का कहना है कि महाराष्ट्र में 7 सितंबर से 13 सितंबर के दौरान हुई अत्यधिक बारिश से फसल बुरी तरह प्रभावित हुई है। गुजरात में सौराष्ट्र और कच्छ क्षेत्र में 66 फीसदी अधिक बारिश हुई जो 2010 के बाद सर्वाधिक रही। स्काईमेट ने कहा कि मूंगफली की 30 से 40 फीसदी फसल और कपास की 20-30 फीसदी फसल पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो चुकी है। कर्नाटक में भी पूरी पैदावार और खरीफ फसलों की गुणवत्ता को नुकसान पहुंचने का डर है। यहां सितंबर के मध्य में भारी बारिश हुई थी।

बारुदों में उड़ते त्यौहार और पर्यावरण की चेतावनी

सुनील बादल

भारत में मंदी का शोर सिर्फ रांची में बिके 10 करोड़ के पटाखों और दिल्ली में बिके ढाई सौ मर्सिडीज की चर्चा के बीच शायद दब गया लेकिन कुछ प्रश्न अनुत्तरित हैं और उनकी भी चर्चा होनी चाहिए।

आमतौर पर बिहार, झारखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश को जो पारंपरिक पर्व त्योहारों के पोषक रहे हैं , को पिछड़ा हुआ माना जाता है। इसी पिछड़े प्रदेश में दिवाली भी बहुत धूमधाम से मनाई जाती है और छठ भी ।

दोनों त्यौहार अब बीत चुके हैं मुख्य रूप से छठ की बात करें तो बिहार के लोग पूरी दुनिया में कहीं भी हो छठ के समय अपने राज्य अपने घर अपने गांव में पहुंचकर छठ मनाना चाहते हैं कितनी भी मंदी हो कितनी भी चर्चा हो कुछ भी हो येन -केन -प्र-कारेण बाथरूम के पेन में बैठकर आ जाए सीढ़ियों पर लटक के आंए लेकिन गांव जरूर पहुंचते हैं और जिस बिहार, झारखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश को उ-द्दंड माना जाता है , वहां किस प्रकार लोग अनुशासित होकर सड़कों की सफाई करते हैं पूजा में सहयोग करते हैं और अपने आसपास के सरोवरों की सफाई करते हैं, यह देखने और समझने की बात है ।हम इसको कितना समझ पाते हैं यह आज हम चर्चा करना चाहेंगे ।सदियों पहले से यह त्यौहार जो मनाए जा रहे हैं, हजारों वर्षों पहले से यह परंपरा है लेकिन इसके पीछे वैज्ञानिकता क्या है यह प्रश्न कई बार उठता है ।जो अर्थशास्त्री हैं उनका कहना है कि इन पर्व त्योहारों के माध्यम से सभी को प्रोत्साहित करने के लिए इसके रचना हुई जैसे अनाज, फल, दिए और अन्य जो सामग्रियां है उसके उत्पादन में लगे हुए लोग इससे प्रोत्साहित होते हैं और पैसा एक जगह जमता नहीं बाजार में घूमता है , लाखों लोगों को रोजगार मिलता है दूसरी तरफ विशेषज्ञों का यह मानना है कि इससे एक बहुत बड़ी बात यह होती है कि बहुत सारे फल जो हम आमतौर पर खाना नहीं चाहते उन्हें भी जब प्रसाद का ठप्पा लग जाता है या उसमें सिंदूर का टीका लग जाता है और प्रसाद हमारे घर पर आता है तो हम उन्हें खाने के लिए मजबूर हो जाते हैं उन्हें फेंक नहीं सकते जैसे डाभा(नींबूनुमा बड़ा फल) । डाभा के बारे में कहा जाता है कि यह बहुत ही उपयोगी होता है खासतौर पर ब्लड प्रेशर की बीमारियों से बचाने के लिए अब इतने वैज्ञानिक ढंग से जब छठ की रचना हुई तब उस-के उद्देश्यों की चर्चा करें दिवाली जिस प्रकार बरसात के बाद जो पहले कच्चे घर हुआ करते थे मिट्टी के घर उसमें टूट-फूट हो जाती थी बरसात में घर चमकने लगते थे उनकी सफाई मरम्मत और उसके रंगाई पुताई का त्यौहार दीपावली था और करंज के दिए इसलिए चलाए जाते थे कि बहुत बड़ी संख्या में जो कीड़े मकोड़े बरसात में पनप जाते थे वह नष्ट हो जाए जिससे हमारी भविष्य की फसल और हम खुद भी सुरक्षित रह सके इसी प्रकार सरोवर उनकी सफाई धर्म के नाम पर कराने के लिए शायद छठ की शुरुआत हुई। लेकिन आज दुःखद बात यह है कि हम पर्यावरण के आसन्न संकट को नकारते हुए इन दोनों त्योहारों में जिस प्रकार पटाखों का प्रयोग करते हैं और उससे उठने वाला जोधा है इन दोनों त्योहारों के उद्देश्य को शून्य कर देता है एक प्रकार से हम उसका उल्टा कार्य करते हैं जहां पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए दीपावली और छठ मनाए जाते थे उसके बजाय हम उसको और प्रदूषित करने के लिए बम पटाखों का प्रयोग कर ध्वनि प्रदूषण लाउडस्पीकर के माध्यम से फैलाकर उसका उद्देश्य या उसकी पवित्रता को नष्ट कर देते हैं ।वैज्ञानिकों की राय क्या है वह देखते हैं।

वैज्ञानिकों ने ग्लोबल वार्मिंग पर चिंता जताते हुए चेतावनी जारी की है कि यदि इसी तरह ये यह बढ़ता रहा तो आने वाले समय में कुछ बुरा हो सकता है। साइंटिफिक विचार देने वाली जनरल साइंस ने अपनी रिव्यू रिपोर्ट में कहा है कि ग्लोबल वॉर्मिंग अगर 2 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ा तो समुद्र लेवल कम से कम 20 फीट यानी 6 मीटर तक बढ़ जाएगा। ऐसा होने के बाद भारत के मुंबई-कोलकाता सहित दुनिया के 20 बड़े शहरों पर डूबने का खतरा उत्पन्न हो जाएगा। माना जा रहा है कि यदि ऐसा हुआ तो धरती का 444000 स्क्वायर मील भू-भाग समुद्र में डूब जाएगा जिसकी वजह से 375 मिलियन लोग प्रभावित होंगे। एक रिपोर्ट के मुताबिक पेरिस में 30 नवंबर से 11 दिसंबर तक पर्यावरण परिवर्तन पर समिट हो रही है। इसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी हिस्सा ले रहे हैं। इसका मकसद दुनिया के औसत तापमान में 2 डिग्री सेल्सियस की संभावित बढ़ोतरी को रोकना है। इसके अलावा संयुक्त राष्ट्र पहली बार क्लाइमेट चेंज से निपटने के लिए ग्लोबल डील पर सभी देशों की रजामंदी चाह रहा है। मुंबई सहित ये 20 शहर हैं 6 मीटर समुद्र लेवल राइज के दायरे मेंमुंबई (इंडिया), कोलकाता (इंडिया), शंघाई (चीन), हांगकांग (चीन), ता-इझोउ (चीन), तानजिन (चीन), नांतोंग (चीन), जियागमेन (चीन), हुआइन (चीन), शांतोऊ (चीन), लियानयुंगैंग (चीन) जकार्ता (इंडोनेशिया), हो ची मिन सिटी (वियतनाम), हनोई (वियतनाम), नाम दिन्ह (वियतनाम), ओसाका (जापान), टोक्यो (जापान), चटगांव (बांग्लादेश), खुलना (बांग्लादेश) और बारिसाल (बांग्लादेश)।

वैज्ञानिकों ने क्यो जताई चिंता-वैज्ञानिकों ने समुद्र लेवल बढ़ने की आशंका जताई है। ऐसा गैस इमिशन की मौजूदा रफ्तार से बढ़ने से हो सकता है।-समुद्र लेवल बढ़ने से समुद्र तटों का कटाव शुरू होगा, जिससे दुनिया का एक बड़ा हिस्सा पानी में डूब जाएगा और लोग बेघर हो जाएंगे। ●

वायु प्रदूषण के कारण हांफती दिल्ली

देवेंद्र सुथार

देश की राजधानी दिल्ली में वायु प्रदूषण की भयावह स्थिति के कारण लोगों को सांस लेने में तकलीफ होने लगी है। हालात इतने विकट हो गए हैं कि सरकार ने सभी स्कूलों को 5 नवंबर तक बंद रखने का आदेश जारी किया है। इसके साथ ही प्रदूषण की वजह से पर्यावरण प्रदूषण रोकथाम एवं नियंत्रण प्राधिकरण ने दिल्ली एनसीआर में हेल्थ इमरजेंसी घोषित की है। हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर और पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह ने बच्चों की सेहत के बारे में सोचने और पराली जलाने से रोकने के लिए कदम उठाने की अपील भी की। वहीं दिल्ली सरकार ने निजी और सरकारी स्कूलों के बच्चों को बांटने के लिए 50 लाख 'एन95' मास्क खरीदे हैं।

ईपीसीए के मुताबिक, दिल्ली एनसीआर में प्रदूषण सीवियर प्लस कटेगरी व एक्यूआई 500 से 700 के बीच पहुंच गया है। दिल्ली में बढ़ते प्रदूषण ने यहां के लोगों की उम्र 10 साल कम कर दी है। पूरे उत्तर भारत में उम्र औसतन 7 साल कम हुई है। यह दावा शिकागो यूनिवर्सिटी की शोध संस्था एनर्जी पॉलिसी इंस्टीट्यूट एट द यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो (ईपीआईसी) ने अपने विश्लेषण के जरिए किया है। विश्लेषण के मुताबिक, साल 1998 से 2016 के बीच गंगा के मैदानी इलाके (उत्तर भारत) में वायु प्रदूषण (हवा में पर्टीकुलेट मैटर यानी पीएम 2.5 और 10) 72 प्रतिशत बढ़ गया। इस पूरे इलाके में भारत की 40 प्रतिशत से अधिक आबादी रहती है। प्रदूषण का स्तर इतना ज्यादा बढ़ने की वजह से उत्तर भारत के लोगों की औसत उम्र 7 साल कम हो गई। दरअसल 1998 मे दिल्ली में पर्टीकुलेट मैटर का प्रदूषण 70 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर था, जो कि 2016 में 113 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर (61 फीसदी ज्यादा) हो गया।

संस्था ने यह विश्लेषण सेटेलाइट डाटा के आधार पर किया है। विश्लेषण में 2016 के बाद के डाटा को शामिल नहीं किया गया है। ईपीआईसी ने विश्लेषण जारी करने के दौरान बताया कि बढ़ते प्रदूषण में हर कोई स्मोकर बन रहा है। नवजात शिशु भी जब पहली सांस लेता है तो उसके अंदर प्रदूषण चला जाता है। प्रदूषण इतना ज्यादा बढ़ रहा है कि यह 24 घंटे में 20-25 सिगरेट के बराबर है। पीएम 2.5 के स्तर को 22 से भाग देने पर उतनी सिगरेट का धुआं लोग अपने अंदर ले रहे हैं। प्रदूषण बढ़ने से लोग बहुत ज्यादा स्तर तक बीमार हो रहे हैं। इससे उनकी उम्र कम हो रही है। ईपीआईसी की फाइंडिंग के बारे में कहा कि हर कोई अपने हिसाब से रिसर्च करता है। मगर एक बात सही है कि इससे लोगों की उम्र कम तो हो रही है। हम वास्तव में नहीं चाहते हैं कि हमारे बच्चों या हमारे बुजुर्गों को प्रदूषण के कारण निरंतर बीमारियों के कारण न जूझना पड़े। अतः प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए एक व्यापक स्वरूप में सोचना हर नागरिक का कर्तव्य है। वास्तव में हम नहीं चाहते कि हमारी भविष्य की पीढ़ियां दिल्ली में एक अस्वास्थ्य कर वातावरण में रहें। हम वास्तव में नहीं चाहते हैं कि हमारे बच्चों या हमारे बुजुर्गों को प्रदूषण के कारण निरंतर बीमारियों के कारण न जूझना पड़े। हरियाणा और पंजाब जैसे राज्यों में पराली जलाए जाने के कारण दिल्ली में प्रदूषण बढ़ रहा है। इस गंभीर समस्या से निजात पाने के लिए दिल्ली के कुछ छात्रों ने इको-फ्रेंडली समाधान खोज निकाला है। इससे न केवल पराली जलाने को रोका जा सकेगा, बल्कि किसानों को राइस स्ट्रॉ की अच्छी कीमत मिलेगी और प्लास्टिक की जगह पेपर की चीजों का इस्तेमाल किया जा सकेगा। दरअसल, छात्रों ने एक मशीन तैयार की है जिससे राइस स्ट्रॉ को पल्प में तब्दील किया जा सकता है। फिर इसी पल्प को प्लेट्स और अन्य इको-फ्रेंडली टेबलवैर बनाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

वहीं शोधकर्ताओं ने एक ऐसी प्रकिया विकसित की है जिसकी मदद से किसी भी कृषि अपशिष्ट लिग्नोसेल्यूलोसिक पदार्थ को होलोसेल्यूलोस या लुगदी और लिग्निन में तब्दील किया जा सकता है। लिग्निन को सीमेंट और सिरेमिक उद्योग में बाइंडर के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। अगर इस तरह के सफल प्रयोग किए जाएं तो पराली के औद्योगिक इस्तेमाल में कोई दिक्कत नहीं होगी। बहरहाल, पराली की विकराल समस्या के लिए शीघ्र समाधान की सख्त आवश्यकता है। आर्थिक तंगी से जूझ रहे किसानों के लिए पराली जलाने की विवशता को समझते हुए सरकार को मध्यस्थता की राह सुझाने की दिशा में कदम उठाना चाहिए। ●

मावलिननॉन्ग एशिया का सबसे स्वच्छ गांव

मावलिननॉन्ग उत्तर पूर्व भारत में मेघालय राज्य के पूर्वी खासी हिल्स जिले का एक गांव है। यह गांव अपनी सफाई के लिए उल्लेखनीय है। मेघालय के मावलिननॉन्ग गांव को लगातार एशिया के सबसे स्वच्छ गांव के रूप में वोट दिया गया है और इसी कारण यह गांव मेघालय के घूमने वाले स्थानों में से एक बन गया है। मावलिननॉन्ग को देखने के लिए बड़ी मात्रा में पर्यटक आते हैं। मावलिननॉन्ग गांव की सड़कें देखकर आपको ऐसा लगेगा का ये सड़कें आज-कल में नई बनीं हैं, क्योंकि सड़क पर आपको धूल का कण देखना मुश्किल होगा। सड़कें हमेशा ताजी लगती रहती हैं।

मावलिननॉन्ग अपनी सफाई के लिए जाना जाता है और यह कार्य केवल एक इंसान के करने से नहीं हुआ हैं यहां हर काम का एक सिस्टम से किया जाता है। गां को साफ रखने के लिए कचरे को बांस से बने डस्टबिन में इकट्ठा किया जाता है, जिसे एक गड्ढे से निर्देशित किया जाता है और फिर खाद के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। गांव का एक सामुदायिक इसकी पहल अनिवार्य करता है कि सभी निवासी गाँव की सफाई में भाग लें। पॉलिथीन और धूम्रपान पर प्रतिबंध लगा हैं।

2003 तक इस गाँव में केवल 500 व्यक्ति ही रहा करते थे और इस गाँव में सैलानियों का आना जाना भी नहीं था। 2014 तक के आकड़ों को देखे तो मावलिननॉन्ग में लगभग 95 घर हैं। साक्षरता दर 90% है। कृषि स्थानीय आबादी का मुख्य व्यवसाय है, जिसमें सुपारी मुख्य फसल है। समुदाय में रहने वाले लोग खासी लोग हैं। यह गांव देश भर में अपने सुपारी उत्पादन के लिए भी जाना जाता है।

काग़ज़ थैला बनाने में पर्यावरण का नुक़सान

उत्तरी आयरलैंड असेंबली द्वारा 2011 में पेश शोध पत्र के अनुसार, प्लास्टिक बैग के मुक़ाबले कागज थैलों को बनाने में चार गुना ऊर्जा की खपत होती है। चूंकि काग़ज़ पेड़ों को काटकर बनाया जाता है तो इससे जंगलों पर भी असर पड़ता है। इस रिसर्च के मुताबिक़, सिंगल यूज़ प्लास्टिक बनाने की तुलना में इसके निर्माण में बहुत अधिक पानी लगता है और इससे बहुत अधिक गाढ़ा ज़हरीला केमिकल निकलता है ।नार्थम्प्टन यूनिवर्सिटी में टिकाऊ कचरा प्रबंधन के प्रोफ़ेसर मार्गरेट बैट्स के अनुसार, 'ये बहुत भारी भी होते हैं। इसलिए इस बात से अलग कि वे कहां बने हैं, उन्हें दुकानों तक पहुंचाने में परिवहन के इस्तेमाल से पर्यावरण का अतिरिक्त नुक़सान भी शामिल हैं।

विश्व कल्याण की सोंच रखते थे गुरु नानकदेव

प्रदीपकुमार सिंह

सिख धर्म की स्थापना गुरुनानक जी द्वारा लगभग पांच सदियों पहले की गयी थी। इस वर्ष नानक की जयन्ती 12 नवम्बर को 550वां प्रकाश पर्व के रूप में बहुत ही श्रद्धापूर्वक मनायी जा रही है। नानक के पिता लाला कल्याण राय (मेहता कालू जी) तथा माता श्रीमती तृप्ता देवी जी थीं। नानक अपने विशाल व्यक्तित्व में दार्शनिक, योगी, गृहस्थ, धर्म सुधारक, समाज सुधारक, कवि, देशभक्त और विश्वबंधु सभी के गुण समेटे हुए थे। नानक जी के प्रति हिन्दू तथा मुसलमान दोनों बराबर श्रद्धा रखते थे।

उस जमाने में हिन्दुओं तथा मुसलमानों में काफी दूरियां थी। इस दूरी को दूर करने के लिए नानक ने हिन्दू तथा मुस्लिम धर्मों के युगानुकूल तथा सार्वभौमिक विचारों को लेकर एक नया सिख धर्म स्थापित किया। सिख के मायने जीवन पर्यन्त एक छात्र की भांति सदैव अच्छी बातों को सीखने वाला व्यक्ति होता है। नानक जी की सिखावत पर चलकर सिख समाज आज विश्व के अधिकांश देशों को अपनी महत्वपूर्ण सेवायें देकर वसुधैव कुटुम्बकम की भारतीय अवधारणा को साकार कर रहा है।

उस समय लोग धर्म के असली तत्व एवं आध्यात्मिक जीवन को बहुत कम महत्व देते थे। परमपिता परमात्मा ने मानव जीवन को त्याग (सच्चा सौदा) का पाठ पढ़ाने के लिए गुरु नानक देव जी को संसार में भेजा। सिख धर्म के संस्थापक नानक का जन्म वर्ष 1469 में उत्तरी पंजाब के वर्तमान पाकिस्तान के लाहौर जिले के तलवंडी ग्राम में हिन्दू परिवार में हुआ था, जिसे अब ननकाना के नाम से जाना जाता है। ननकाना साहिब, पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त में स्थित एक शहर है। इसका वर्तमान नाम सिखों के पहले गुरु नानक देव जी के नाम पर पड़ा है। यह लाहौर से 80 किमी दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। यह गुरु नानक देव का पवित्र जन्मस्थान है, इसलिए यह विश्व भर के सिखों का एक बड़ा पवित्र तीर्थ स्थान भी है। ननकाना साहिब गुरुद्वारा सारे विश्व में विख्यात है। महाराजा रणजीत सिंह ने गुरु नानकदेव के जन्म स्थान पर भव्य एवं ऐतिहासिक गुरुद्वारे का निर्माण कराया था। नानक का नाम उनकी बड़ी बहन नानकी के नाम पर रखा गया था। बचपन से नानक की ईश्वर के प्रति भक्ति, निष्ठा और उनका आध्यात्मिक ज्ञान देख उनके शिक्ष-ाक, सहपाठी एवं नगरवासी सभी आश्चर्यचकित हो जाते थे। एक बार पिता ने कुछ सामान खरीद लाने को पैसे दिए। नानक ने वे पैसे गरीबों को भोजन कराने में खर्च कर दिए। पिता से वापिस आकर बोले: 'पिताजी, मैं सच्चा सौदा कर आया। यह भी कहा जाता है कि आध्यात्मिक रूझान को देखकर उनके पिता ने नानक को व्यापार में लगा दिया। नानक ने व्यापारी बनकर कमाई के मुनाफे से भूखों को भोजन खिलाना शुरू कर दिया। उन्होंने सामाजिक सद्भाव के लिए लंगर की परम्परा शुरू की। नानक ने मूर्ति पूजा तथा जाति प्रथा के खिलाफ आवाज उठाई और मानवता को सबसे ऊँचा स्थान दिया।

सर्वधर्म समभाव के समर्थक नानक जी ने वर्ष 1499 से वर्ष 1524 तक 25 वर्षों तक कई लम्बी तथा कष्टदायी यात्राएं कीं। अपनी इन यात्राओ के दौरान उन्होंने हिन्दू और मुस्लिम दोनों के धार्मिक स्थलों पर श्रद्धापूर्वक जाकर उस परम शक्ति को नमन किया। जिसे हम ईश्वर, अल्ला, खुदा, वाहे गुरु, गॉड आदि अनेक नामों से पुकारते हैं। नानक की शिक्षाओं में मुख्य रूप से नाम जपने, किरत करने यानी गृहस्थ ईमानदार की तरह रोजगार में लगे रहने और वंद चको अर्थात परोपकारी सेवा और अपनी आय का कुछ हिस्सा गरीब लोगों में बाँटने की नसीहत दी। वहीं अहंकार, क्रोध, लालच, भौतिक वस्तुओं से अत्यधिक लगाव और वासना से बचने की सलाह दी। नानक के पवित्र हृदय में ईश्वर का वास होने के कारण उनके दिव्य तथा मानवीय उपदेश सीधे परमात्मा की ओर से अवतरित होते थे। नानक की आत्मा में गुरुमुखी भाषा में गुरु ग्रन्थ साहिब का ज्ञान उतरा। गुरु ग्रन्थ साहिब का एक लाइन में सन्देश है- ईश्वर की राह में बड़े से बड़ा त्याग करना ही सच्चा सौदा है।

नानक कहते थे कि अव्वल अल्लाह नूर उपाया, कुदरत दे सब बन्दे, एक नूर ते सब जग उपज्या कौन भले कौ मंदे।। नानक नाम चढ़ दी कला तेरे भाने सर्वत्तदा भला! अर्थात यदि तेरे हृदय में संसार के समस्त प्राणी मात्र की भलाई की भावना होगी तो नानक का नाम तुझे ईश्वर की ओर ले जायेगा।

मयूरी प्रेक्षागृह में समापन सत्र का आयोजन

संवाददाता

सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2019

रांची : सीएमपीडीआई के मयूरी प्रेक्षागृह में सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2019 के समापन सत्र का आयोजन किया गया। समापन सत्र समारोह के बतौर मुख्य अतिथि डॉ0 अमित मुखर्जी तथा बी0 रॉय चैधरी एवं श्री देवेन मुखी उपस्थित थे। मुख्य अतिथि डॉ अमित मुखर्जी- अस्थि रोग विशेषज्ञ, जमशेदपुर ने अच्छे नेतृत्व के लिए चरित्र की शुद्धि के महत्व पर बल दिया और हम सभी अपने दैनिक जीवन में बदलाव लाकर अपने समाज को किस तरह सुधार सकते हैं इस चीज की व्याख्या की। उन्होंने अपने सहयोगी श्री देवेन मुखी का उदाहरण प्रस्तुत किया जिन्होंने खुद को बदलकर अपने समाज में मद्यपान की कुप्रथा के रोकथाम में सार्थक प्रयास किया। वहीं अन्य वक्ता श्री बी0 रॉय चैधरी ने संतुलित जीवन के लिए जीवन के लेखा-जोखा रखने की महत्ता पर प्रकाश डाला। सीएमपीडीआई के मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री ए0के0 श्रीवास्तव ने सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान की गई गतिविधियों के बारे में बताया तथा व्यवस्थागत सुधारों के द्वारा पारदर्शिता बढ़ाने के विभिन्न प्रयासों की जानकारी दी । इस अवसर पर विभिन्न नियमों के एक 'कम्पेंडियम'का भी विमोचन किया गया। इस अवसर पर सीएमपीडीआई के मुख्य सतर्कता अधिकारी ए0के0 श्रीवास्तव, क्षेत्रीय संस्थान-3 के क्षेत्रीय निदेशक श्री मनोज कुमार, मुख्य अतिथि डॉ0 अमित मुखर्जी ने क्वीज प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागी प्रथम-श्री उपेन्द्र सिंह एवं मनीष दोहारे, द्वितीय- प्रदीप कुमार एवं दीपक कुमार तथा तृतीय स्थान पर सुश्री रूचि स्मृति बासके एवं सुश्री स्वेत राय तथा निबंध प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागी प्रथम-आदित्या श्रेष्टकर, द्वितीय-प्रबाल प्रियरंजन एवं तृतीय स्थान पर रहे संजीव कुमार को पुरस्कृत किया

माननीया राज्यपाल श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को स्वाति सिंह द्वारा लिखित पुस्तक "शादी का सपना" राजभवन में भेंट किया गया।

कोयला कर्मियों के लिए अब 15लाख रुपये की अनुग्रह राशि

संवाददाता

रांची: कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) एवं उसकी सभी अनुषंगी कंपनियों में कार्य कर रहे साढ़े तीन लाख से अधिक कामगारों को गुरुवार को कोयला एवं खान मंत्री प्रल्हाद जोशी ने बड़ी सौगात दी। कोयला खदानों में होने वाले जानलेवा हादसोंके बाद कर्मी के परिवार को दी जाने वाली अनुग्रह राशि (EX-Gratia) की मौजूदा 05 लाख रुपये की सीमा को 300% बढ़ाकर 15 लाख रुपये किए जाने काऐलान श्री जोशी ने किया।

गुरुवार को कोल इंडिया लिमिटेड की अनुषंगी कंपनी महानदी कोलफील्ड्स लिमिटेड (एमसीएल) की एक दिवसीय यात्रा के दौरान यह घोषणा करते हुए प्रह्लाद जोशी ने कहा कि कोल इंडिया एवं उसकी समस्त अनुषंगी कंपनियों में कार्य करने वाले सभी कर्मियों (कोल इंडिया कर्मियों एवं संविदा कर्मियों) को इस घोषणा का लाभ मिलेगा।

साथ ही, उन्होंने कहा कि भारत सरकार देश के लोगों के जीवन स्तर को बेहतर से बेहतर बनाने की दिशा में लगातार कार्य कर रही है। उन्होंने घोषणा की कि महानदी कोलफील्ड्स वित्त वर्ष 2024-24 तक 4000 से अधिक स्थानीय परियोजना प्रभावित लोगों को रोजगार मुहैया कराएगी। साथ ही, उन्होंने स्वास्थ्य सुविधाओं को घर-घर तक सुलभ कराए जाने की क्रेंद सरकार की प्रतिबद्धता दोहराते हुए कहा कि महानदी कोलफील्ड्स जल्द ही अपने कार्यक्षेत्र के आस-पास के गांवों में मोबाइल मेडिकल यूनिट का परिचालन करेगी, ताकि लोगों को उनके घरों तक निःशुल्क स्वास्थ्य सुविधाएं मिल सकें।

उन्होंने कहा कि आगामी वर्षों में महानदी कोलफील्ड्स अपने कोयला क्षेत्रों से रेल के जरिये कोयले के निर्बाध परिवहन के लिए 9000 करोड़ रुपये से अधिक का निवेश कर रेलवे लाइनों का निर्माण करेगी और रेलवे से जुड़ी अन्य आधारभूत संरचनाओं के विकास में मदद करेगी। अपने एमसीएल दौरे के दौरान उन्होंने एशिया के सबसे बड़े तालचर कोलफील्ड्स का हवाई निरीक्षण किया, लिंगराज कोयला खदान का निरीक्षण कर महानदी कोलफील्ड्स लिमिटेड के कामकाज की समीक्षा की और तालचर के लिंगराज कोयला क्षेत्र में नए डीएवी स्कूल के निर्माण की आधारशिला रखी। उन्होंने उम्मीद जताई की लगभग 45 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाला यह स्टेट ऑफ दि आर्ट स्कूल आने वाले समय में देश के चुनिंदा बेहतरीन स्कूलों में अपनी जगह बनाएगा। कार्यक्रम में कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक (सीएमडी) अनिल कुमार झा एवं महानदी कोलफील्ड्स के सीएमडी बी.एन. शुक्ला सहित कई गणमान्य अतिथि मौजूद थे।

उलिहातू के किसानों की आय दुगुनी होगी

.....पेज 1 का शेष

के आकलन के लिए केवीके वैज्ञानिक डॉ रंजय कुमार सिंह, डॉ शंकर कुमार सिंह एवं डॉ हिमांशु सिंह ने उलीहातू एवं इसके 5 टोलों ईचाडीह, ईलाहातु, बुकुलड-ीह, तूबिद, कांतिडीह और उलीहातू में 30-31 अक्टूबर को सर्वे कार्य किया। दल ने परंपरागत तकनीक से फसलवार खेती, पशुपालन, उपलब्ध सिंचाई साधन एवं अन्य संसाधनों, तकनीकी प्रसार,उद्यान,कृषि वानिकी एवं प्राकृतिक संसाधन की जानकारी एकत्रित की और विस्तृत प्रतिवेदन कुलपति को समर्पित किया।

विश्वविद्यालय वैज्ञानिकों ने पाया कि परंपरागत शैली से खेती गाँव के लोगों के जीवन यापन का मुख्य आधार है। ग्रामीण आधुनिक कृषि तकनीकों से अनभिज्ञ है और इसके लाभों से पूरी तरह वंचित है। गाँव में देशी पशुधनों में गाय, बकरी, मुर्गी एवं सूकर का परंपरागत तरीकों से पालन किया जाता है। गाँव में कुँआ ही एकमात्र सिंचाई का साधन है।

बैठक में ग्रामीण युवतियों ने मशरुम की खेती और कृषि उत्पादों के मूल्यवर्धन में अभिरूचि दिखाई। वैज्ञानिकों ने उन्हें मशरुम उत्पादन एवं मूल्यवर्धन विषय पर व्यावहारिक प्रशिक्षण मुहैया कराने की बात कही। गाँव में देशी पशुधन की प्रधानता एवं कम लाभ की बात जानकर ग्रामीणों ने उन्नत नस्ल के पशुओं का पालन, प्रबंधन देखी गई। मौके पर डॉ पंकज सेठ ने ग्रामीणों को उन्नत नस्ल के पशुओं का पालन एवं प्रबंधन एवं प्रशिक्षण में रुचि बताया।

देने की बात कही और मधुमख्खी पालन के आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों की जानकारी दी।

डीन फिशरीज कॉलेज डॉ एके सिंह ने छोटे किसानों के लिए मछली पालन की बहु प्रणाली की तकनीक और लाभों के बारे में बताया।

अध्यक्ष शस्य विभाग डॉ राघव ठाकुर ने छोटे एवं सीमांत किसानों के लिए उपयोगी समन्वित कृषि प्रणाली के तकनीक और आय सृजन के अवसर पर प्रकाश डाला।

केवीके, चतरा के हेड डॉ रंजय कुमार सिंह ने जैविक खेती की संभावनाओं एवं खेती की रणनीति तथा केवीके, सिमडेगा के हेड डॉ शंकर कुमार सिंह ने किसानों की आय दुगुनी करने में वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन की तकनीक एवं उपयोगिता बारे में बताया। उलिहातु के किसान कृषि तकनीकी प्रक्षेत्रों में लाभकारी तकनीकों को देखा प्रशिक्षण के दुसरे दिन उलिहातु से आये 65 किसानों के दल ने गुरूवार को कुलपति डॉ आरएस कुरील के संग पशुचिकित्सा संकाय स्थित बकरी, भेड, सूकर, कुक्कुट एवं हेचरी फार्म तथा मात्स्यिकी विभाग का भ्रमण किया। मौके पर पशु वैज्ञानिक डॉ सुशील प्रसाद, डॉ रविन्द्र कुमार तथा डॉ एके सिंह ने पशुधन से बेहतर आय व रोजगार सृजन के तकनीकी उपायों के बारे में बताया।

दल को परिसर स्थित कृषि वानिकी फार्म सेंटर में वानिकी वैज्ञानिक डॉ एमएस मल्लिक एवं डॉ अनिल कुमार ने बांस, गम्हार एवं करंज आधारित, चारा फसल आधारित, वन पौधों के बीच मसाला पौधा आधारित, वन पौधों के बीच औषधीय पौधा आधारित एवं बहुउद्देशीय पौधा आधारित कृषि वानिकी प्रणाली की तकनीक एवं

गाँव के किसानों की आय दुगुनी करने पर दो दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन

उलिहातु गांव के किसानों के मांग के अनुरूप कृषि विकास की गतिविधियों के संचालन को कार्यरूप देने हेतु 6 -7 नवम्बर को किसानों की आय दुगुनी करने के तकनीक विषय पर विश्वविद्यालय में दो दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण में बिरसा मुंडा के पोते सुखराम मुंडा के नेतृत्व में 65 जनजातीय किसानों के दल ने भाग लिया। इस अवसर पर कुलपति डॉ आरएस कुरील के साथ गाँव के सभी किसानों ने विश्वविद्यालय में पहली बार परिसर स्थित भगवान बिरसा मुंडा के प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और श्रदांजलि दी।

विश्वविद्यालय के प्रसार प्रबंध कक्ष में आयोजित प्रशिक्षण की अध्यक्षता करते कुलपति ने भगवान बिरसा मुंडा के नाम से स्थापित बिरसा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा उलिहातु गाँव का विकास करना नैतिक कर्तव्य एवं दायित्व की बात कही। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों में भागीदारी उलिहातु गाँव के ग्रामीण कृषकों हक है। विश्वविद्यालय गाँव के किसानों की आय में बढ़ोतरी से सबंधित सभी विकसित तकनीकों को विभिन्न योजनाओं व परियोजनओं के माध्यम से कृषि वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में चलायेगा। इन तकनीकों द्वारा उलिहातु गांव के ग्रामीणों की आजीविका एवं पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए ग्रामीण रोजगार सृजन के अवसर को बढ़ावा दिया जायेगा। उन्होंने बिना हताश हुए ग्रामीणों को उद्देश्य में सफल होने तक लगातार नवीनतम कृषि तकनीकी प्रयास अपनाने की सलाह दी।

प्रशिक्षण के पहले दिन कुलसचिव डॉ नरेंद्र कुदादा ने मुंडारी भाषा में विश्वविद्यालय के आधुनिक कृषि प्रणाली के बारे में बताया। उन्होंने दो दिवसीय इस प्रशिक्षण में विश्वविद्यालय द्वारा सभी लाभकारी कृषि तकनीकों से उलिहातु गाँव के किसानों को परिचित कराया। प्रशिक्षण में मुख्य वैज्ञानिक (तेलहनी फसल) डॉ सोहन राम ने तीसी फसल उत्पादन की उन्नत तकनीक, बीएयू द्वारा विकसित तीसी के दो प्रभेद दिव्या एवं प्रियम के लाभों के बारे में बताया।

कीट वैज्ञानिक डॉ मिलन कुमार चक्रवर्ती ने आईसीएआर की क्षमता परियोजना के तहत 800 मधुमक्खी बॉक्स के साथ मधुमख्खी पालन को बढ़ावा लाभों के बारे में बताया। मशरूम उत्पादन ईकाई में डॉ नरेंद्र कुदादा ने मशरूम उत्पादन, गृह विज्ञान विभाग में डॉ रेखा सिन्हा ने कृषि उत्पादों का प्रसंस्करण एवं मूल्यवर्धन तथा तकनीकी पार्क में डॉ केके झा ने बागवानी से सबंधित तकनीकों, प्रबंधन एवं लाभों से अवगत कराया। भ्रमण के बाद प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत कृषक - वैज्ञानिक अंतर्मिलन गोष्ठी में डॉ सोहन राम के नेतृत्व में कृषि वैज्ञानिकों में डॉ एस कर्मकार, डॉ सीएस महतो, डॉ योगेश कुमार, डॉ कमलेश कुमार ने रबी मौसम में खाद्यान, दलहनी, तेलहनी एवं नगद फसल की खेती की पैकेज प्रणाली एवं उन्नत प्रभेदों के बारे में बताया। मौके पर डॉ पी महापात्र ने मिट्टी की जाँच एवं मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन तथा जैव उर्वरक के प्रयोग और लाभों से अवगत कराया। इस अवसर पर डॉ सोहन राम ने बताया कि विश्वविद्यालय के द्वारा आईसीएआर की विभिन्न शोध एवं प्रसार परियोजना के तहत उलिहातु गाँव के ईचाडीह, ईलाहातु, बुकुलडीह, तूबिद, कांतिडीह और उलीहातू टोलों के करीब 195 कृषक परिवार के तहत जोड़ा जायेगा।

किसानों की आय बढ़ोतरी में तकनीक उन्नत पशुपालन सशक्त माध्यम : कुलपति

प्रशिक्षण के समापन समारोह के अवसर पर कुलपति ने ग्रामीणों को बताया कि उलिहातु गाँव परंपरागत तरीकों से पशुपालन में काफी समृद्ध है। वैज्ञानिक तकनीक और उन्नत नस्ल के प्रयोग से पशुपालन से ग्रामीणों को दुगुनी से अधिक आय करने में मदद मिलेगी और ग्रामीण रोजगार के अवसर को बल मिलेगा। उन्होंने कहा कि कृषि कार्य से आय में बढ़ोतरी में उन्नत एवं वैज्ञानिक प्रबंधन से पशुपालन एक सशक्त माध्यम साबित हो रहा है। चालु रबी मौसम में विश्वविद्यालय में कार्यरत आईसीएआर परियोजनाओं के तहत गेहुँ, चना, राई - सरसों एवं तीसी खेती को अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण, प्रक्षेत्र दिवस और प्रशिक्षण द्वारा तकनीकी प्रसार कार्यक्रम को चलाया जायेगा। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित फसल किस्मों एवं पशु नस्लों को ग्रामीणों के बीच शोध एवं प्रसार कार्य हेतु दिए जायेंगे। गाँव में पशुधन की संभावनाओं को देखते हुए सूकरपालन में झारसुक नस्ल, मुर्गीपालन में झारसिम नस्ल तथा बकरी पालन में ब्लैक बंगाल नस्ल को बढ़ावा दिया जायेगा।

झारखंड वन अधिकार मंच की बैठक

"PEOPLE's MANIFESTO ON LAND and GOVERNANCE "विषय पर विभिन्न राजनीतिक दल सहित सामाजिक संगठन, जन संगठनों और झारखंड राज्य मे जल, जंगल और जमीन के मुद्दों पर कार्य कर रहे नागरिक संगठनों का संयुक्त बैठक तथा भूमि और अभिशासन विषयक जन घोषणा पत्र पर हुई चर्चा ।

संवाददाता रांची : झारखंड असेंबली इलेक्शन 2019 को मद्देनजर में रखते हुए झारखंड वन अधिकार मंच की तरफ से पीपल्स मेनिफेस्टो ऑन लैंड एंड गवर्नेंस जारी किया गया. इसमें मंच से जुड़े हर एक जिला से लोग आए थे इसका मुख्य उद्देश्य राजनितिक पार्टियों के सामने उनके चुनाव अजेंडा में आम जन तथा वन अधिकार के मुद्दों पर सहमति जताकर तथा जन सरोकार की राजनीति के प्रति सजग करने हेतु प्रेस क्लब में कार्यशाला का आयोजन किया गया. जिसमें मुख्य रूप से पांचवी अनुसूची पर जोर दिया गया, ताकि कमजोर वर्गों के हितों की रक्षा के लिए विशेष प्रावधान की व्यवस्था हो सके. भूमि अधिकार के लिए भी बात किया लैंड बैंक को लेकर ग्रामीणों के बिच में भ्रम की स्थिति को समाप्त

करने हेतु पहल की पेशकश की गयी . वन अधिकार कानून 2006 को उसकी मूल भावना के अनुरूप लागू करने की बात रखी गई .वन अधिकार मंच का मांग है कि इन सभी दावों की समीक्षा ग्रामसभा करें और ग्राम सभाओं की अनुशंसा को वन अधिकार कानून 2006 की मूल भावना के आलोक में अनुमंडलीय स्तरीय एवं जिला स्तरीय समिति मान्यता दें. इसमें पेसा 1996 तथा खनन के मुद्दों पर भी मंच के पदाधिकारी गण बातें बताएं. इस कार्यशाला का उद्देश्य झारखंड में सक्रिय जितने भी राजनीतिक पार्टी थे उनसे इस विधानसभा चुनाव को लेकर उनके घोषणापत्र में यह सब मुद्दे शामिल है कि नहीं वह अपने तरीके से तर्क वितर्क करके लोगों के बीच में अपनी अपनी पार्टियों का पक्ष रखा मुख्य रूप से शोभा यादव जेवीएम की केंद्रीय अध्यक्ष, शुभेंदु घोष ,बशीर अहमद सीपीआई माले आदि ने अपने अपने पार्टियों का पक्ष रखा. कार्यक्रम का नेतृत्व सुधीर पाल ,जॉर्ज मोनीपल्ली, रामस्वरूप तिवारी, संजय टूडू, प्रभाकर नाग ने अपनी अपनी बातें मंच की तरफ से रखी।

फादर जॉर्ज ने यह कहा कि अगर जो भी पार्टियां इन सब मुद्दों को बिना लिए आपके घर तक, आपके क्षेत्र में वोट मांगने की अपील करते हैं तो उसे दरकिनार करना हमारा दायित्व बनता है क्योंकि इसके बिना हमारा अस्तित्व पर खतरा मंडरा सकता है ।

जानवरों के अंग के साथ एक हिरासत में

रांची: स्टेशन रोड के होटल में वन विभाग और पुलिस की छापेमारी। 22 पीस जानवर के लिंग और हड्डी ज़ब्त। ज़ब्त किया गया लिंग और हड्डी का तंत्र मंत्र में होता है इस्तेमाल, तश्कर आशीष मिश्रा को लिया गया हिरासत में। इसके पहले भी दिल्ली में दीपावली की रात उल्लुओं के तस्कर पकड़ाये थे। उनके पास से पांच उल्लू जब्त किये गये थे जो करोड़ो रूपये के थे। जहां चीन जैसे देशों में पशु अंगो की तस्करी यौनवर्द्धक दवाओं को बनाने के लिये की जाती है वहीं भारत में तंत्र मंत्र के लिये भी जानवरों के अंगो की तस्करी होती रही है।

सिर्फ सरकार को मत कोसिये,अपनी जिम्मेवारी भी समझिए

विवेकानंद

- पानी में मर रही मछली और धरती पर घूंट रही सांस
- प्रदूषण के सबसे बड़े कारक प्लास्टिक से बचना सबसे जरुरी

दिल्ली में यमुना नदी के प्रदूषित जल में छठव्रती महिलायें, प्रदूषण से उत्पन्न झाग से हिमप्रदेश का भ्रम हो रहा है

अभी छठ में दिल्ली की प्रदूषित हो चुकी यमुना नदी की तस्वीर वायरल हुई। तस्वीर को देखकर लगा जैसे बर्फ के बिच में छठ पूजा मनाई जा रही हो। या फिर जैसे स्वर्ग का दृश्य हम टीवी पर देखते हैं, कुछ ऐसा ही एहसास हो रहा है। परन्तु वह स्वर्ग नहीं बल्कि धरती पर हम सबके द्वारा निर्मित नरक का दृश्य था। यह तो हुई दिल्ली की बात। अब रांची की बात करें तो यहाँ तालाब में मछलियों के मरने की घटना हुई। मतलब कि पानी में भी मछलियाँ सुरक्षित नहीं हैं और मनुष्य धरती पर ऑक्सीजन की कमी से तड़प रहा है। दोनों ही तस्वीरें काफी भयावह हैं। यह तस्वीर अब डरा नहीं रही बल्कि चेतावनी दे रही कि अब यदि हमने कुछ ठोस कदम नहीं उठाया तो यूँ ही घुट घुट के हम मरते रहेंगे। इन खतरों के लिए पर्यावरण का प्रदूषण तो जिम्मेवार है ही परन्तु सबसे अधिक जिम्मेवार है प्लास्टिक।अभी वठएढ ने एक रिपोर्ट दी है उसके मुताबिक हर मिनट समुन्द्र में एक ट्रक कचरा प्लास्टिक फेंका जा रहा है। सालाना 80 लाख टन प्लास्टिक समुन्द्र में फेंका जा रहा है। इससे 800 समुद्री जीवों का अस्तित्व खतरे में है।वर्ल्ड इकोनोमिक फोरम के अनुसार भारत में सालाना 56 लाख टन प्लास्टिक कूड़ा बनता है। दुनियाभर में जितना कूड़ा सालाना समुद्र में डम्प किया जाता है उसका 60 प्रतिशत भारत डम्प करता है। बीबीसी के इतने बड़े पैमाने पर कचरा प्लास्टिक नदियों के रास्ते ही होकर समुन्द्र में जा रहा है। जो कहीं न कहीं समस्त जीव जगत के लिए बड़ा खतरा है। ब्लू प्लैनेट शो में सर डेविड एटेनबरो ने समंदर में प्लास्टिक से पैदा हो रही परेशानियों के बारे में बताया था। जनता की बढ़ती फ़िक्रि देखकर कई देशों की सरकारें और कंपनियां प्लास्टिक के बेतहाशा इस्तेमाल को रोकने के लिए कई क़दम उठा रही हैं।

पर्यावरण के लिए बाकी चीजें तो खतरनाक हैं ही परन्तु उसमे बहुत बड़ा योगदान प्लास्टिक का है।प्लास्टिक से होने वाले नुकसान की जानकारी अपने आप में नाकाफी है। जब तक इसके नुकसान जानने के बाद ठोस कदम न उठाए जाएं। सरकार और पर्यावरण संस्थाओं के अलावा भी हर एक नागरिक की पर्यावरण के प्रति कुछ खास जिम्मेदारियां हैं जिन्हें अगर समझ लिया जाए तो पर्यावरण को होने वाली हानि को बहुत हद तक कम किया जा सकता है। खुद पर नियंत्रण इस समस्या को काफी हद तक कम कर सकता है।

प्रदुषण के मामले में सामान्य रूप से और आदतन हमने सरकार और व्यवस्था को कोसना शुरू कर दिया और काफी हद तक यह सही भी है परन्तु गौर करें तो इस हालात के लिए हम आप भी कम दोषी नहीं हैं। रांची ही नहीं झारखण्ड के तालाबों की स्थिति देखेंगे तो इसका सहज अनुमान हम लगा सकते हैं। तालाबों में फेंके जाने वाले प्लास्टिक कचरों को रोककर हम पर्यावरण को बचाने की दिशा में अपना बड़ा योगदान दे सकते हैं। यह सामान्य तर्क दिया जा सकता है कि आखिर आम नागरिक क्या करे ?तो इसका जवाब भी बहुत सामान्य है कि आम नागरिक ही इस मामले में बड़ा योगदान दे सकते हैं। क्योंकि जब मछलियाँ पानी में सुरक्षित नहीं हैं तो फिर धरती पर हम अपने हालात का सहज अनुमान लगा सकते हैं। सरकार ने पलास्टिक को रोकने की पहल तो शुरू की है परन्तु कानून के डर से ज्यादा प्रभावी होगा आम नागरिकों की पहल। हम प्लास्टिक से जितना जयादा बचने की कोशिश करेंगे हमारे लिए उतना अच्छा होगा। हालाँकि प्लास्टिक इस कदर हमारे जीवन में शामिल हो चुका है कि इसे अब दूर करना मुश्किल जरुर है नामुमकिन नहीं। इसलिए यह आवश्यक है कि हम प्लास्टिक छोड़ें और कोशिश करें कि उसका विकल्प हमारे सामने हो।

प्लास्टिक से कैसे बचें :-

- आजकल बच्चों के खिलौनों में ज्यादा प्लास्टिक की वस्तुएं होती हैं। कोशिश करें कि बच्चों को ऐसे खिलौने नहीं दें। प्लास्टिक के दुष्प्रभाव से बच्चों को जरुर अवगत कराएँ क्योंकि वही हमारे भविष्य हैं।
- अपने घर में ऐसी वस्तुओं की सूचि बनायें जो प्लास्टिक की हैं और फिर धीरे धीरे उन्हें घर से दूर करने की कोशिश करें। यदि आप गौर करेंगे तो यह बात समझ आएगी कि जो वस्तुएं आपके पास प्लास्टिक की हैं, उसके अन्य विकल्प भी बाजार में मौजूद हैं। हो सकता है ऐसा करने में आपका बजट इजाजत नहीं दे तो धीरे धीरे इन्हें दूर करने की कोशिश करें।
- ऐसे प्लास्टिक के इस्तेमाल से बचें जिसे एक बार इस्तेमाल के बाद ही फेंकना होता है जैसे प्लास्टिक तरल पदार्थ पीने की स्ट्रॉ, चाय पीने के कप, घर में सजावट में लगाये जाने वाले रंग-बिरंगे झालर। और इसी तरह का अन्य सामान।
- घरेलु व सामाजिक उत्सवों-आयोजनों पर थर्मोकोल और प्लास्टिक के प्लेट-गिलास की जगह कागज और पत्ते से बने चीजों का इस्तेमाल करें। ऐसे किसी भी आयोजन में यदि सज सज्जा करनी हो तो सामान्य रंगीन कागज व अन्य प्राकृतिक वस्तुओं का उपयोग करें।
- घर में पड़े प्लास्टिक बैग को संभाल कर रखें। इन्हें कई बार इस्तेमाल में लाएं। बाजार जाने के दौरान अपने साथ कपड़े या कागज के बने थैले लेकर जाएं।

E ZONE CARE

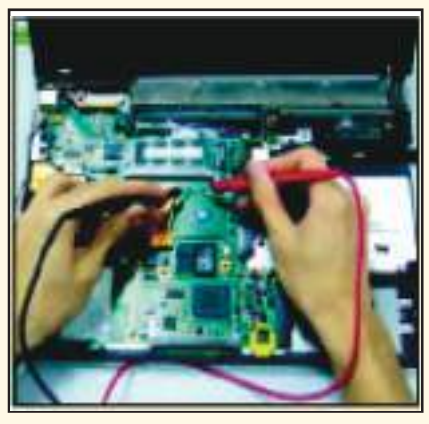

Software Problem, Motherboard Chip-Level Repair, Laptop AC Adapter Repair and Replacement, Laptop LCD Screens Repair and Replacement, Dead Laptop Problems, No Display Problem, LCD Dim Display Problem, LCD White Display Problem, BIOS Password Problem, all type of Laptop repair and service

- Repair your laptop with 3-month warranty.

info@ezonecare.in, ezonecare.in
Rospa Tower 3RD Floor, Main Road, ranchi
93108 96575, 70047 69511
Mon - Fri 10:30 am - 7:00 pm
SunDAY Closed

फोटो न्यूज

गायब है चरवाहे की बांसुरी : ये नेतरहाट के मैगनोलिया प्वाइंट की तस्वीर है, जहां पर्यटक सूर्यास्त देखने आते हैं। कथानुसार अंग्रेज अफसर की बेटी मैगनोलिया चरवाहे की बांसुरी पर फिदा थी जिसने प्रेम में आत्महत्या कर ली थी । उसी की निशानी में लगी मूर्ति से अब बांसुरी ही गायब है।

पेड़ की छाल या जिराफ की खालः पाइन के पेड़ की छाल जिराफ के खाल की तरह हो गये हैं

अद्भुत है लोहरदगा का अखिलेश्वर धाम

अभिषेक शास्त्री

झारखण्ड के छोटानागपुर की धरती पुरातात्विक दृष्टिकोण से 'शैव कल्ट' का क्षेत्र रहा है। यह क्षेत्र शिव आराधना का प्रमुख केंद्र रहा है। लोहरदगा, गुमला, सिमडेगा, खूंटी और रांची में पुरातात्विक सर्वेक्षण एवं खुदाई में इस बात के प्रमाण और पुष्ट होते रहे हैं।

राजधानी रांची से करीब 57 किलोमीटर पश्चिम में स्थित लोहरदगा जिले का अखिलेश्वर धाम इस बात का खास उ-दाहरण है। हालांकि लोहरदगा जिले का पूरा क्षेत्र सदियों से शिव आस्था का खास केंद्र रहा है। यहां खखपरता धाम, महादेव मंडा में विशाल शिवलिंग प्रामाणिक साक्ष्य हैं।

इनमें अखिलेश्वर धाम का शिव मंदिर अपने निर्माण और ऐतिहासिक महत्व के लिए खास प्रसिद्ध और महत्व का स्थान है। इतिहासकारों और पुरातत्व विभाग ने अपनी जांच में आधिकारिक तौर पर स्थापित किया है कि यह मंदिर और क्षेत्र सदियों पहले शिव अराधना का बड़ा केंद्र था।

यह धाम करीब 11वीं सदी में बनायी गयी थी। इसी के समकालिन लोहरदगा का खखपरता धाम भी बनाया गया। इस बात की पुष्टि इस बात होती है कि जिस तरह से मंदिर का निर्माण किया गया, वैसी शैली 11वीं सदी के आस-पास ही देखी गयी है।

मंदिर निर्माण की खास है शैली

अखिलेश्वर धाम मंदिर एक ऊंचे चट्टान पर निर्मित है। जिसकी ऊंचाई करीब 30 से 40 फुट बतायी जाती है। मंदिर का निर्माण पत्थरों को एक दूसरे में सांचे के साथ जोड़ कर किया गया है। इसमें किसी तरह के सिमेंट या गारे का प्रयोग नहीं किया गया है। मंदिर के पुजारी शंभू पंडा ने बताया, ऐसी मान्यता है कि मुगलकाल में इस मंदिर पर भी हमला हुआ था। जिसके प्रमाण हैं कि शिवलिंग का एक हिस्सा टूटा हुआ है और नंदी की मूर्ती भी खंडित हो गयी है। हालांकि हाल के दिनों में मंदिर का जिर्णोद्धार कराया गया है।

आध्यात्मिक पर्यटक क्षेत्र है अखिलेश्वर धाम

अखिलेश्वर धाम आध्यात्मिक पर्यटक स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। प्राकृतिक सुंदरता ने इसके महत्व को और बढ़ाया है। मंदिर में झारखंड ही नहीं अन्य राज्यों से लोग यहां अपनी मनोकामना की पूर्ति के यहां आते हैं। मंदिर के पुजारी शंभू पंडा ने बताया, यहां के शिवलिंग को आलिंगन कर आप जो भी कामना करते है, वह जरूर पूरी होती है। पुजारी ने बताया यहां सावन और रथ मेला के अवसर पर श्रद्धालुओं की भिड़ काफी होती है।

प्राचीन तालाब और हरे पत्थर का शिवलिंग

यहां की सबसे अद्भूत चीज है हरे पत्थर

का शिवलिंग। कुछ लोग इसे माणिक पत्थर का कहते हैं। अखिलेश्वर धाम के निकट ही एक प्राचीन तालाब है, जो मंदिर की खुबसूरती में चार चांद लगा देता है। इसी तालाब की पानी से जल लेकर श्रद्धालु शिवलिंग को जलार्पण करते हैं। इस तालाब के बारे में किवंदती है कि इसकी गहरायी का पता नहीं लगाया जा सका है। ऐसी बातें प्रचलित हैं कि इस तालाब को 7 खाट की रस्सी से नापने की कोशिश की गयी थी, लेकिन सफलता नहीं मिली। हालांकि अब ऐसा नहीं है। गर्मी के दिनों में तालाब पूरी तरह से सुख जाता है।

कैसे पहुंचे अखिलेश्वर धाम

राजधानी रांची से करीब 57 किलोमीटर पश्चिम में अखिलेश्वर धाम स्थित है। यहां खुद के वाहन या यात्री वाहनों का इस्तेमाल कर पहुंचा जा सकता है। अगर कोई रांची से आ रहा हो तो नगड़ी भाया बेड़ो होते हुए यहां पहुंचा जा सकता है। यहां शाम तक यात्री वाहन भी मिल जाते हैं, जिसके सहारे इस अद्भूत मंदिर तक आसानी से पहुंचा जा सकता है।

देवघर में इको फ्रेंडली चुनाव की अपील

जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त श्रीमती नैन्सी सहाय ने सभी राजनीतिक दलों व अभ्यर्थियों से की अपील

आओ मिलकर अलख जगाएँ,
शत प्रतिशत मतदान कराएँ।
देवघर का है गर्व, ये मतपर्व

● प्रचार-प्रसार में प्लास्टिक के प्रयोग को कहे नोः- जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त श्रीमती नैन्सी सहाय....

प्रदुषण रोकने व जनसमान्य को होने वाली असुविधा के साथ सिंगल यूज प्लास्टिक को लेकर जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त श्रीमती नैन्सी सहाय ने सभी राजनीतिक दलों एवं अभ्यर्थियों से अपील करते हुए कहा है कि निर्वाचनों में प्रसार सामग्री के रूप में ''सिंगल यूज प्लास्टिक'' का उपयोग न करें। निर्वाचन प्रचार के दौरान पोस्टर, बैनर, कट-आउट, होर्डिंग, विज्ञापन, कटलरी, पानी पीने के पाउय/बोतल में सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग से संपूर्ण वातावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है जो विशेष रूप से मनुष्यों एवं पशुओं के स्वास्थ्य को दुष्प्रभावित करता है। यह स्थिति सभी के सक्रिय सहयोग से बदली जा सकती है।

आजकल परम्परागत रीतियों के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के ऐसे पर्यावरण अनुकूल विकल्प मौजूद है, जिसका निर्वाचन प्रचार अभियान के लिए उपयोग किया जा सकता है। एक जिम्मेदार राजीतिक दल होने के नाते, आपसे यह आशा की जाती है कि अब से निर्वाचनों के प्रयोजनार्थ किसी भी रूप में ''सिंगल यूज प्लास्टिक'' का प्रयोग न किया जाय। तदनुसार किसी भी रूप में ''सिंगल यूज प्लास्टिक'' से अपने पर्यावरण को मुक्त रखने के लिए हमे सामूहिक संकल्प लेना चाहिए। उन्होंने निर्वाचन अधिकारियों और निर्वाचकों से भी अपील करते हुए कहा है कि देश को प्लास्टिक प्रदुषण से मुक्त बनाने में अपना पूर्ण सहयोग दे।

''वो भारत की अनपढ़ पीढ़ी''

जो हम सबको बहुत डाँटती थी -कहती थी!''पानी को व्यर्थ मत बहाओ ...घर में बरकत नहीं होगी''''अन्न नाली में न जाए, इससे अच्छा किसी के पेट में पड़ जाए''''सुबह-सुबह तुलसी पर जल चढाओ,बरगद पूजो,पीपल पूजो,आँवला पूजो,''''मुंडेर पर चिड़िया के लिए पानी रखा कि नहीं?''''हरी सब्जी के छिलके गाय के लिए अलग बाल्टी में डालो।''''अरे कांच टूट गया है। उसे अलग रखना। कूड़े की बाल्टी में न डालना, कोई जानवर मुँह न मार दे।''यह पीढ़ी इतनी पढ़ी-लिखी नहीं थी पर पर्यावरण की चिंता करती थी,क्योंकि वह शास्त्रों की श्रुति परंपरा की शिष्य थी।और हम चार किताबें पढ़ कर उस पीढ़ी की आस्थाओं को कुचलते हुये धरती को विनाश की कगार पर ले आये और हम"आधुनिक" हो गये हैं या यूं कहें कि"नालायक"हो गये हैं ?

बलदेव शर्मा, गुमला

क्या हम बचा पाएंगे नदी को नाला बनने से!

सिदाम महतो

रांची/बुण्डूः वक्त गुजरते देर नही लगती। समय के साथ हमारे आसपास की चीजें भी बदल जाती है। लोगो का सोच बदलता है तो कुदरत की सूरत भी बदल जाती है। प्रकृति के कई वरदानों में से एक नदी जो अपना मार्ग खुद बनती है रेत की अंधाधुन्द खनन के कारण नदी की तस्वीर बदलने लगी है।

अतीत में झांक कर नदी की वर्तमान स्थिति को देखते हैं तो मन सिहर उठता है।

बात जनवरी 2012 की है। बुण्डू की एक पिकनिक कांची नदी के किनारे आती है। नदी के किनारे सरई , पलाश के पेड़ और नदी में बहता साफ पानी।इस खूबसूरत दृश्य के आकर्षण ने टीम को वही वनभोज करने के लिए विवश कर दिया। नदी के उस पानी में मस्ती हुई, स्नान हुआ। जोरका बनाकर(बालू खोदकर)पेयजल की व्यवस्था की गयी। जल ऐसा कि बाजार का बोतलबन्द वाटर फेल! उसी पानी से सभी के लिए खाना बना।सभी ने उस पानी से अपनी प्यास भी बुझाई। बालू के ढेर में पिकनिक टीम ने नाच गान भी किया। अंत में टीम ने फ़ोटो भी खिंचवाई। सात साल के बाद पिकनिक टीम के सदस्य ने उस जगह की वर्तमान तस्वीर भी भेजी है।

नदी में ही उतार देते हैं जेसीबी और नदी तल को खोद डालते हैं

नदी किनारे सरई , पलाश के पेड़ तो हैं पर उस जगह वो आकर्षण नही है।नदी की वो धार नही है। पानी की गुणवत्ता बिगड़ गयी है। पानी का रंग भी बदला सा है।नदी अब नाले का रूप लेने लगी है है। बालू के ढेर की जगह अब चट्टाने निकल आई है।

पास के गांव के लोग बताते हैं कि सात साल में नदी में बहुत कुछ बदला। बरसात के दिनों में नदी पानी से पूरा भर जाता था अब नदी बीच से होकर ही बहती है। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि नदी अब गहरी होती जा रही है। नदी में बालू खनन के लिए मशीन का इस्तेमाल नदी को गहरा नाला बनाने में जिम्मेदार माना जा रहा है।इस कारण से नदी की खुद की एक इकोसिस्टम थी जो छिछले जल पर आधरित थी वो भी नष्ट हो चुकी है। दरअसल कॉस्टल नदी के कारण इस जल में अनुकूलन वाले कई जीव रहते थे वो अब खत्म हैं। ग्रामीण बताते हैं कि पहले नदी में जेसीबी मशीन नही लगती थी। हमलोग खुद ट्रक में बालू भरते थे। ट्रक में बांस की सीढ़ी बांधते और बेलचा ,गमला की मदद से ट्रक को भर देते थे। हालाँकि रेत खनन नियमावली 2017 के अनुसार छोटे बालू घाट में मशीन का प्रयोग वर्जित है पर निगरानी के अभाव में छोटे बालू घाट पर मशीनों से बालू की खुदाई जारी रहती है।

भविष्य में नहीं दिखेगी ये मौज मस्ती, बालू के लिये नदी तट ही बर्बाद होने को है

दुर्लभ प्रजाति का चांदी का हिरण दिखा

विलुप्त होने की कगार पर पहुंचे छोटे हिरण जैसे जानवर की एक बहुत ही दुर्लभ प्रजाति को लगभग 30 वर्षों में पहली बार वियतनाम के उत्तर पश्चिमी जंगल में देखा गया है।

नेचर इकोलॉजी एंड इवोल्यूशन जर्नल में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, इस दुर्लभ प्रजाति के जानवर को सिल्वर-बैकेड चेवरोटाइन या माउस हिरण के रूप में जाना जाता है, जिसे आखिरी बार 1990 में देखा गया था। इसे भारत में मायावी हिरण कहा जाता है।

विलुप्तप्राय जीवों के लिये अंतर्राष्ट्रीय संघ द्वारा बनाए गए खतरे की प्रजातियों की सूची में सिल्वर-बैकेड चेवरोटाइन (ट्रागुलस वर्सीकोलर) को 'रेड लिस्ट' अथवा विलुप्त होने वाली श्रेणी में रखा गया है।

अखबार के स्वामी सन कम्युनिकेशन के लिये प्रकाशक मनोरंजन सिंह द्वारा प्रकाशित तथा मेसर्स डी. बी. कॉर्प लिमिटेड,प्लॉट नं535 एवं 1272 ललगुटवा पुलिस स्टेशन, रातू, रांची (झारखंड) से मुद्रित और सन कम्युनिकेशन,अपोजिट कब्रिस्तान गेट नं.-2, टीवीएस गली, रातू रोड, रांची-834001 (झारखंड) से प्रकाशित। संपादकः एम.के.शर्मा * (पी.आर.बी. अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये उत्तरदायी)आर.एन.आइ. पंजीयन क्रमांक : JHAHIN/2019/78094, email:greenrevolt2019@gmail.com. Ph. 8539978825, 8825374626. समस्त विवाद रांची न्यायालय के अधीन होंगे।